



NEERAJ®

M.H.D. - 11

हिन्दी कहानी

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

IGNOU.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Archana Sisodia, M.A., M.Phil., Ph.D. (Hindi)



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

हिन्दी कहानी

Question Paper—June-2024 (Solved)	1-2
Question Paper—December-2023 (Solved)	1-3
Question Paper—June-2023 (Solved)	1-2
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-4
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved)	1-3
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1-4
Question Paper—December, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-3

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	तीसरी कसम : विश्लेषण और मूल्यांकन	1
2.	डिप्टी कलक्टरी : विश्लेषण और मूल्यांकन	9
3.	बदबू : विश्लेषण और मूल्यांकन	18
4.	राजा निरबंसिया : विश्लेषण और मूल्यांकन	27
5.	बिरादरी : विश्लेषण और मूल्यांकन	35
6.	हंसा जाई अकेला : विश्लेषण और मूल्यांकन	41
7.	यही सच है : विश्लेषण और मूल्यांकन	49
8.	मलबे का मालिक : विश्लेषण और मूल्यांकन	57

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
9.	बहिर्गमन : विश्लेषण और मूल्यांकन	65
10.	गौरैया : विश्लेषण और मूल्यांकन	72
11.	ड्राइंग रूम : विश्लेषण और मूल्यांकन	79
12.	क्लॉड ईथरली : विश्लेषण और मूल्यांकन	88
13.	एक जीता-जागता व्यक्ति : विश्लेषण और मूल्यांकन	93
14.	सुख : विश्लेषण और मूल्यांकन	101
15.	हरी बिन्दी : विश्लेषण और मूल्यांकन	108
16.	बोलने वाली औरत : विश्लेषण और मूल्यांकन	113
17.	पार्टीशन : विश्लेषण और मूल्यांकन	123
18.	स्विमिंग पूल : विश्लेषण और मूल्यांकन	127
19.	बायोडाटा : विश्लेषण और मूल्यांकन	134
20.	सिलिया : विश्लेषण और मूल्यांकन	141
21.	तलाश : विश्लेषण और मूल्यांकन	148



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

हिन्दी कहानी

M.H.D.-11

समय : 2 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 50

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए—

(क) रेलवे लाइन की बगल से बैलगाड़ी की कच्ची सड़क गयी है दूर तक। हिरामन कभी रेल पर नहीं चढ़ा है। उसके मन में फिर पुरानी लालसा झाँकी, रेलगाड़ी पर सवार होकर, गीत गाते हुए जगरनाथधाम जाने की लालसा।
.....उलटकर अपने खाली टम्पर की ओर देखने की हिम्मत नहीं होती है। पीठ में आज भी गुदगुदी लगती है। आज भी रह-रहकर चम्पा का फूल खिल उठता है, उसकी गाड़ी में। एक गात की टूटी कड़ी पर नगाड़े का ताल कट जाता है बार-बार! उसने उलटकर देखा, बोरे भी नहीं, बाँस भी नहीं, बाघ भी नहीं।परीदेवीमीताहीरादेवी। महुआ-घटवारिन-कोई नहीं। मरे हुए मुहूर्तों की गुँगी आवाजें मुखर होना चाहती हैं। हिरामन के होंठ हिल रहे हैं। शायद वह तीसरी कसम खा रहा है—कम्पनी की औरत की लदनी।

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानी 'तीसरी कसम' से उद्धृत है। हिरामन हीराबाई के साथ अत्यंत रम जाता है, किंतु जब हीराबाई रेल में बैठकर चली जाती है, तो हिरामन उदास हो जाता है। उसके मन में अनेक प्रकार के भाव आते हैं। उन्हें भावों का वर्णन इन पंक्तियों में किया गया है।

व्याख्या—जब रेलगाड़ी चल दी और हीराबाई चली गई, तो हिरामन भारी मन से चलने लगा। वह अपनी बैलगाड़ी पर बैठा। रेलवे लाइन की बगल से ही बैलगाड़ी के लिए कच्ची सड़क बनी थी। हिरामन कभी रेल में नहीं बैठा था। हीराबाई के जाने पर उसके मन में दबी इच्छा बाहर आई। वह रेलगाड़ी पर बैठकर गीत गुनगुनाते हुए जगन्नाथ धाम की यात्रा पर जाना चाहता था। आज वही लालसा फिर जाग गई। अब उसकी गाड़ी में हीराबाई नहीं बैठेगी, वह खाली है इसलिए वह पीछे पलटकर भी नहीं देख पा रहा था। हीराबाई के होने के एहसास से उसका मन प्रसन्न हो उठता है। फिर उसने पलटकर देखा, उसका मन उदास हो गया, गाड़ी खाली थी। अब उसमें बोरे, बाँस, हीराबाई आदि कुछ नहीं था। वह कुछ कहना चाहता है, शायद तीसरी कसम खा रहा है कि अब गाड़ी में कभी नाटक कंपनी की किसी औरत को नहीं बिठाएगा।

विशेष—1. मनोवैज्ञानिक चित्रण है।

2. किसी प्रिय के बिछुड़ने पर मन की दशा का वर्णन है।

3. भाषा पात्रानुकूल है एवं देशी प्रभाव है।

(ख) ग्रीज और तेल लगा हुआ सामान उठाने के कारण हाथ गन्दगी से भर गए थे। साइरन की आवाज उसके कानों में पड़ी, तब उसने काम बन्द किया। ऐसा लगता था कि साइरन यदि किसी कारण से न बजता, तो वह उसी प्रकार यंत्रवत् काम करता रहता। साथी कामगार हाथ धोकर कपड़े पहन रहे थे। जल्दी-जल्दी में उसने दोनों हाथ कैरोसीन तेल में धो डाले। साबुन का डिब्बा टटोलकर देखा तो वह खाली था। भूमि पर से थोड़ी मिट्टी उठाकर वह नल की ओर चल दिया। पिछले तीन-चार महीनों की नौकरी में आज वह पहली बार मिट्टी से हाथ धो रहा था। भुरभुरी मिट्टी को पानी के साथ लगाकर उसने हाथों में मला और फिर दोनों हाथ रल के नीचे लगा दिए। पानी के साथ मिट्टी की पतली पर्त भी बह चली। दूसरी बार मिट्टी लगाने से पहले उसने हाथों को सूँघा और अनुभव किया कि हाथों की गंध मिट चुकी है। सहसा एक विचित्र आतंक से उसका समूचा शरीर सिहर उठा।

उत्तर—संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश शेखर जोशी की कहानी 'बदबू' से लिया गया है। शेखर जोशी की कहानी 'बदबू' युगीन संदर्भों को प्रकट करती है, जिसमें पंचवर्षीय योजनाओं के प्रारंभ के पश्चात औद्योगीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप पूंजीवादी-सामंत मानसिकता वाले प्रबंधकों के द्वारा मजदूरों का शोषण, बेरोजगारी के कारण सस्ता श्रम आसानी से मिल जाने तथा अपनी योग्यता से कम पारिश्रमिक मिलने पर भी काम करने को मजबूर बेरोजगार युवकों के कर्म और फल के अनुचित संबंध को शोषण की संस्कृति के विकसित होने के संदर्भ को वर्तमान में भविष्य को चित्रित किया गया है, जहां स्वतंत्रता के बाद सच और श्रम का महत्त्व कमजोर होता प्रतीत होता है। 'बदबू' वर्तमान समय की इसी प्रासंगिकता तथा शेखर जोशी की सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति का परिणाम है, जो अपने समय की धारा का भी अतिक्रमण करती दिखाई देती है।

व्याख्या—बुद्धन के हाथ कारखाने में ग्रीस और तेल लगा हुआ सामान उठाने के कारण गंदगी से भरे हुए थे। कारखाने की छुट्टी का साइरन बजने पर उसने काम बंद कर दिया। वह काम में इतना डूबा था, मानो मशीन हो और यदि साइरन न बजता तो वह काम

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

हिन्दी कहानी

M.H.D.-11

समय : 2 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 50

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए—

(क) भूमि पर से थोड़ी मिट्टी उठाकर वह नल की ओर चल दिया। पिछले तीन-चार महीनों की नौकरी में आज पहली बार मिट्टी से हाथ धो रहा था। भुरभुरी मिट्टी को पानी के साथ लगाकर उसने हाथों में मला, और फिर दोनों हाथ नल के नीचे लगा दिए। पानी के साथ मिट्टी की पहली पर्त भी बह चली। दूसरी बार मिट्टी लगाने से पहले उसने हाथों को सूँघा और अनुभव किया कि हाथों की गंध मिट चुकी है। सहसा एक विचित्र आंतक से उसका समूचा शरीर सिहर उठा। उसे लगा आज वह भी घासी की तरह इस बदबू का आदी हो गया है। उसने चाहा कि वह एक बार फिर हाथों को सूँघ ले। लेकिन उसका साहस न हुआ मगर फिर बड़ी मुश्किल से वह धीरे-धीरे दोनों हाथों को नाक तक ले गया और इस बार उसके हर्ष की सीमा न रही।

उत्तर—संदर्भ—शेखर जोशी की कहानी 'बदबू' कारखाने में काम करने वाले लोगों के जीवन का चित्रण करती है। कारखाने में मजदूर, मिस्त्री, सचमैन, फॉर्मैन, चौकीदार, साहब सभी मौजूद हैं। मजदूरों की जिन्दगी, उनके हास्य, उनकी पारिवारिक स्थिति आदि सभी का कुशलतापूर्वक अंकन शेखर जोशी 'बदबू' कहानी में करते हैं। व्यवस्था का दमन, उसके प्रति मजदूरों के प्रतिकार की कोशिश, इस प्रतिकार को कुचलने हेतु व्यवस्था का दमन-चक्र और आखिर में सबल व्यवस्था के प्रतिकारी की अकेले रह जाने की नियति ने इस कहानी को अद्भुत व अनोखा बना दिया है। वास्तव में 'बदबू' कहानी जिजीविषा और संघर्ष का प्रतीक है और जब तक वह अनुभव हो रही है, संघर्ष की संभावना भी बची रहती है। यह बदबू जीवन की संभावना तथा मानवीय संवेदना के बाकी रहने का संकेत है, किन्तु पूँजीवादी ताकतों जीवन की संभावना तथा मानवीय संवेदना को इस प्रकार कुचल देती हैं कि 'बदबू' के रहते भी कारखाने के लोगों को वह अनुभव ही नहीं होती, क्योंकि वे व्यवस्था के क्रीतदास, वस्तु या कामकाजी जानवर में परिवर्तित हो चुके हैं, जिनकी संवेदना को पेट, परिवार तथा बच्चों के नाम पर समाप्त कर दिया गया है।

कारखाने में काम करने वाला एक नौजवान व्यवस्था का दास न बनकर संघर्ष करता है, किंतु वह परिस्थितियों से टूटने लगता है। किंतु उसके अंदर संघर्ष की चिंगारी है, जिसे लेखक कहानी की इस घटना के द्वारा व्यक्त करना चाहता है।

व्याख्या—नौजवान को नौकरी करते हुए तीन-चार महीने हो जाते हैं और कारखाने में काम करते हुए सभी के हाथों में बदबू आती है, किंतु धीरे-धीरे लोग इसके आदी हो जाते हैं और उन्हें बदबू नहीं सताती। लेकिन यह नौजवान लगातार इस बदबू को अपनी पूरी नौकरी में अनुभव करता रहता है। एक दिन जब वह पहली बार नौकरी में मिट्टी से हाथ धो रहा था, तो मिट्टी लगाकर हाथ धोने के बाद हाथों को सूँघा तो उसे लगा कि बदबू मिट चुकी है। यह विचार आते ही वह अंदर से डर गया, उसे लगा कि वह भी घासी और दूसरे लोगों की तरह बदबू का आदी हो चुका है तथा उनके जैसा व्यवस्था का गुलाम हो गया है। फिर बड़ी मुश्किल से उसने अपने हाथों को पुनः सुँघा, तो उसे बदबू का एहसास हुआ तो वह प्रसन्न हो गया, उसे लगा कि अभी वह इस व्यवस्था का हिस्सा नहीं है, उसके अंदर संघर्ष करने की आग शेष है, उसका अस्तित्व अभी विद्यमान है।

विशेष—1. प्रतीकात्मकता है।

2. स्थितियों के अनुसार व्यक्ति का अस्तित्व ढल जाता है।

3. संघर्ष करने वाला व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी पहचान बनाए रखता है।

4. भाषा में गांभीर्य है।

(ख) जले हुए किवाड़ का वह चौखट मलबे में से सिर निकाले साढ़े सात साल खड़ा तो रहा था, पर उसकी लकड़ी बुरी तरह भुरभुरा गयी थी। गनी के सिर के छूने से उसके कई रेशे झड़कर आस-पास बिखर गये। कुछ रेशे गनी की टोपी और बालों पर आ रहे थे। उन रेशों के साथ एक केंचुआ भी नीचे गिरा जो गनी के पैर से छः आठ इंच दूर नाली के साथ-साथ बनी ईंटों की पटरी पर इधर-उधर सरसराने लगा। वह छिपने के लिए सुराख ढूँढ़ता रहा। जरा-सा सिर उठाता, पर कोई जगह न पाकर दो-एक बार सिर पटकने के बाद दूसरी तरफ मुड़ जाता।

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

हिन्दी कहानी

तीसरी कसम : विश्लेषण और मूल्यांकन

1

परिचय

सन 1950 से 1965 के मध्य तक रचित कहानी साहित्य को अनेक वैचारिक वाद-विवादों से गुजरने के पश्चात 'नयी कहानी' नाम से जाना गया, जिसने एक आंदोलन का रूप लेते हुए बदलते देशकाल तथा मानसिकता सहित कहानी की वस्तु व रूपविधान को नवीन सिरे से परिभाषित किया। इन कहानीकारों में राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर तथा मोहन राकेश उल्लेखनीय हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात मध्यवर्गीय जीवन में अनेक परिवर्तनों का आरंभ हुआ, जिसके कारण नयी कहानी के दौर की कहानियों में कथा विषयों के रचना-विधान सहित वस्तुगत आधार भी परिवर्तित हो गया। अतः नयी कहानी के कथाकारों ने शहरी मध्यवर्ग की इसी परिवर्तित संवेदना को अपनी कहानियों का केन्द्रबिन्दु बनाया है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' ग्राम संवेदना के प्रतिनिधि रचनाकार हैं, जिन्होंने नयी कहानी की अनेक कथाधाराओं को समग्रता से विश्लेषित करते हुए उसकी संवेदना, प्रतिबद्धताओं, दर्शन तथा बहुलता को शहरी संवेदना के कथा-साहित्य से अलग बदलाव के परिदृश्य को पाठकों के समक्ष उपस्थित किया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

नयी कहानी आन्दोलन : ग्राम संवेदना और आँचलिकता

'नयी कहानी' में विद्यमान 'अनुभव की प्रामाणिकता' का आग्रह ही इसे अन्य कहानी प्रवृत्तियों से भिन्न बनाता है। 'अनुभव की प्रामाणिकता' को बहुधा 'जिये हुए या भोगे हुए' अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है, किन्तु यह वास्तव में रचना के विधान तथा भाषा के माध्यम से अनुभव की विश्वसनीयता को प्रस्तुत करने की कला

मात्र है। इसी कला को अनुभव की प्रामाणिकता के संदर्भ में रेणु ने अपनी कहानी 'तीसरी कसम' में प्रयुक्त किया है।

'नयी कहानी' को स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में आने वाले अनेक बदलावों के रूप में भी देखा जाता है, जिसके कुछ लक्षण 1950 की घटनाओं के साथ संबंधित हैं तथा नवीनता का सूत्रपात करने के लिए भी काफी सीमा तक उत्तरदायी हैं।

स्वाधीनता की पूर्वसंध्या की विरासत

'साहित्य में गतिरोध' नामक आलेख के माध्यम से नयी कविता आंदोलन के प्रमुख कवि विजयदेव नारायण साही ने सन् 1953 में पिछले दस वर्षों के साहित्यिक परिदृश्य (1943 से 1953 तक) की तीन प्रवृत्तियों को स्वाधीनता की पूर्वसंध्या के रूप में उजागर किया है, जिसमें से पहली प्रवृत्ति यह थी कि 1950-51 की प्रगतिवादी धारा से गुजरते हुए लेखकों के आत्मालोचन तथा आत्म-परीक्षण की प्रक्रिया के फलस्वरूप साहित्य की व्यापक जनवादी चेतना संकुचित तथा सीमित हो गई थी और वे कम्युनिस्ट पार्टी की सामयिक नीति मात्र को साहित्य-सृजन मान चुके थे।

अति-आधुनिकतावाद नयी कहानी की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति है, जिसमें समस्त प्रतिष्ठित मूल्यों को अस्वीकार कर उदात्त तथा पवित्र को सर्वथा अविश्वसनीय रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अति-आधुनिकता में व्यक्ति की मानसिक अवस्था को सर्वोच्च मानते हुए वास्तविकता को प्रकट करने की प्रवृत्ति पायी जाती है। अति-आधुनिकता की इसी प्रवृत्ति की प्रबलता के कारण इसकी अवधि लम्बी तथा स्थायी नहीं रह सकी, क्योंकि इसमें सर्जनात्मकता की भूमिका शून्य थी।

नयी कहानी की तीसरी प्रवृत्ति इसकी विविधता, विचित्रता तथा अनुभूत सत्य है, जो हिंदी के अधिकांश साहित्यकारों का प्रमुख स्वर बना तथा जिसने सन 1942 में साम्राज्यवादी ताकतों के विरुद्ध एक शस्त्रहीन व साधनहीन क्रांति का बिगुल बजाया था

2 / NEERAJ : हिन्दी कहानी

तथा जिन्होंने रक्तपात से विचलित होकर अपने मानवीय मूल्यों को नहीं भुलाया था। वास्तव में साही नयी कहानी की इन तीनों प्रवृत्तियों के आधार पर उस पर लगे अनास्थावाद, द्रोह और मूल्यध्वंस के आरोपों से युवा लेखन को बचाने का प्रयास करते हैं। नयी कहानी के लेखकों ने अपने लेखन में जिस चारित्रिक अराजकता, अनास्था, व्यक्तित्व के बिखराव, निराशावादिता को अपनाया था, उसे उस समय कम्युनिस्ट पार्टी ने स्वाधीनता नहीं माना था।

1953 में पिछले दस वर्षों में जो अधिक संयत, समंजित तथा संतुलित व सर्जनात्मक मूल्य नयी कहानी में विकसित हुए थे, वही स्वाधीनता की पूर्वसंध्या की विरासत के परिदृश्य में नयी पीढ़ी के आगमन में देखे जा सकते थे, जिसने प्रगतिवादिता, आधुनिकता, समाजवादिता से ऊपर व्यक्तिपरक समाजोन्मुखता को लेकर चलना प्रारंभ किया, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति एकाग्र तथा केन्द्रीभूत हो गया। इस प्रकार की शहरी संवेदना को नयी कहानी के माध्यम से नगरीकरण की प्रक्रिया के परिवर्तन के रूप में दर्शाया गया, जिसे व्यक्ति अपने स्नायुतंत्र पर अनुभव कर रहा था।

फणीश्वरनाथ रेणु, ऐसे ही रचनाकार हैं, जो स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय तथा प्रतिबद्ध रहते हुए भी अपने सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े रहे और जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से इसी संस्कृति को व्यापक जनवादी तथा लोकपरक तत्त्वों तक प्रसारित करने का प्रशंसनीय कार्य किया था।

ग्राम संवेदना

स्वतंत्रता का आशय ग्रामीण भारत के लिए शहरी भारत से बिल्कुल विपरीत था, क्योंकि विदेशी सत्ता के हाथों ग्राम-शिल्प व उद्योग-धंधों का पहले ही विनाश हो चुका था और शेष कमी जमींदारी तथा ताल्लुकेदारी व्यवस्था ने किसानों को बर्बाद करके पूरी कर दी। यद्यपि आजादी की लड़ाई में किसानों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी तथापि आजादी के उपरांत भी उन्हें आशा के अनुरूप परिणाम प्राप्त नहीं हुए तथा उनको प्राप्त स्थान भी उनसे लगातार छिनता चला गया। इसकी पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण कारण यह था कि स्वतंत्र भारत की अर्थव्यवस्था में अचानक से जो परिवर्तन आया, वह उपयुक्त तैयारी के बिना लागू कर दिया था। कृषि प्रधान देश को औद्योगीकरण के मॉडल के अनुरूप बनाने का प्रयास तो भरपूर किया गया, किन्तु गांव शहरों के उपनिवेश ही बने रहे और असंतुलन की स्थिति में औद्योगीकरण की आवश्यकताओं को पूर्ण न कर पाने की दशा में कृषिभूमि का निरंतर ह्रास होता चला गया, जिसके परिणाम शिल्पी व श्रमिक वर्गों के पलायन तथा विस्थापन के रूप में बड़े पैमाने पर सामने आने लगे।

कृषि से किसान के अस्तित्व के जुड़े होने के कारण पराधीन भारत में जमींदारी व्यवस्था जहां किसानों की बदतर स्थिति के लिए उत्तरदायी थी, वहीं आजादी के उपरांत भी स्थिति में अधिक सुधार नहीं हुआ, क्योंकि जमींदारी उन्मूलन से संबंधित कानून

अधिकांश राज्यों, जैसे बिहार आदि में देर से लागू किए गए तथा इन कानूनों में भी खेतिहर व भूमिहीन किसानों को कोई स्थान नहीं मिला। इन्हीं कारणों से फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कर्मस्थली व रचनास्थली बिहार का 'पूर्णिया' ग्राम-अंचल बना है। जमींदारी, जजमानी तथा परजा-पउनी जैसे संबंधों में आजादी के बाद बदलाव आने से किसानों की स्थिति में सुधार की आशा की गयी, किन्तु स्वतंत्रता का पहला दशक स्वप्नदर्शी समय बनकर रह गया।

टूटते परिवार, असफल विवाह, अवसाद, अहंकेन्द्रित टकराव जैसी शहरोन्मुखी संवेदना स्वतंत्रता के बाद प्रथम दशक में नयी कहानी के रूप में सामने आयी, जिसमें श्रीलाल शुक्ल, रेणु, नागार्जुन, अमरकान्त जैसे कथाकारों ने ग्राम विकास योजना पर ध्यान केन्द्रित करते हुए ग्राम्य जीवन का वर्णन किया। ग्राम्य जीवन को शहरीकरण की प्रक्रिया के मध्य गांव से विस्थापित होकर शहर में बसने वाले लोगों के माध्यम से विविध स्थितियों को विषय-वस्तु का प्रमुख आधार नयी कहानी के कथाकारों ने बनाया है, जिसमें स्वाधीनता के बाद के गांवों के लोक जीवन को उजागर किया है, इनमें प्रेमचन्द के गांव के परिदृश्य भिन्नता तथा नवीनता लिए हुए हैं।

आँचलिकता

नयी कहानी के शिल्प में आँचलिकता का विकास महत्वपूर्ण है। आँचलिकता के अंतर्गत वस्तु-सामग्री तथा शिल्प कौशल सहित स्थानीयता, भौगोलिक परिस्थितियां, निवासियों का चरित्र, उनकी जीवन पद्धति, घटनाक्रम और चरित्र-व्यवहार जैसे तत्त्वों को सम्मिलित किया जाता है। बलवंत सिंह के 'काले कोस', 'दो अकालगढ़' जैसे उपन्यास आँचलिकता के अप्रतिम तथा विशिष्ट उदाहरण हैं।

स्थानीयता आँचलिकता का एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व भी है, जिसका सृजन भाषा, परिवेश, तीज-त्यौहार, रहन-सहन तथा लोकजीवन के सूक्ष्म-निरीक्षण द्वारा साकार चित्र के रूप में किया जाता है। स्थानीयता में क्योंकि परिवेश की वास्तविकता, लोक जीवन के तत्व तथा पात्रों की जीवंतता समाहित होती है, इसलिए कोई भी ग्राम-अंचल की कहानी ठोस परिवेश की कहानी का रूप लेते हुए आँचलिकता को स्पर्श करती है। हिन्दी कथा-साहित्य में इसी आँचलिकता का प्रारंभ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' से माना जाता है।

रेणु औद्योगीकरण की भीड़ से 'लोकजीवन' को हटाकर उसकी सांस्कृतिक चेतना तथा उससे अनुप्राणित जीवन-पद्धति के कुशल चितरे हैं। उनका प्रत्येक पात्र व्यक्ति के रूप में विशिष्ट तथा साकार रूप ग्रहण करता है, जोकि रेणु के लेखन की प्रमुख विशेषता है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानियां और नयी कहानी

बिहार के पूर्णिया के ओराही हिंगना नामक गाँव में जन्मे फणीश्वरनाथ 'रेणु' सामाजिक सरोकार रखने वाले नागरिक और देशभक्त थे, जिन्होंने 'भारत छोड़ो आंदोलन' तथा आजादी के बाद

नेपाल में जनता के साथ सशक्त क्रांति में सक्रिय भाग लिया था, साथ ही साहित्य-सृजन के माध्यम से वे शोषण व दमन के विरुद्ध आजीवन संघर्षरत रहे। अपने ‘मैला आँचल’ (1954) उपन्यास के माध्यम से उन्होंने शीघ्र ख्याति प्राप्त की। उन्होंने जयप्रकाश नारायण के आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण पुलिस की यातना सहकर जेल की सजा भी भोगी।

रेणु आयु तथा रचनाकार की दृष्टि से प्रेमचन्द की बाद की पीढ़ी के तथा नयी कहानी आंदोलन की स्वातंत्र्योत्तर पीढ़ी के मध्य में रहने वाले समवयस्क कहानीकारों, जैसे अज्ञेय, यशपाल आदि की श्रेणी में रखे जाते हैं।

रेणु ने अनेक गद्य विधाओं, जैसे उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्टाज आदि सभी को अपनी प्रतिभा से संवारा है। ‘मैला आँचल’, ‘दीर्घतपा’, ‘परती परिकथा’ (उपन्यास), ‘ठुमरी’, ‘आदिम रात्रि की महक’, ‘अग्निखोर’, ‘अच्छे आदमी’ (कहानी संग्रह), ‘समय की शिला पर’, ‘वनतुलसी की गंध’, ‘ऋणजल-धनजल’ आदि गद्यरूपों की विभिन्न विधाओं (संस्मरण रेखाचित्र, रिपोर्टाज आदि) के संकलन हैं, जो उनकी विशिष्ट प्रतिभा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

फणीश्वरनाथ ‘रेणु’ को गांव की समृद्ध संस्कृति के चित्रण के साथ ही अंचल के पिछड़ेपन को उजागर करने में हिचक अनुभव नहीं होती है। गरीब किसान, लोक कलाकार, अंचल के अभावों, अंधविश्वासों, रुग्णता से ग्रस्त जीवन, मनमुटाव, छोटी-छोटी ईर्ष्याओं, स्पर्द्धाओं आदि अत्यंत सूक्ष्म तथा स्वाभाविक चित्रण करने में रेणु सिद्धहस्त हैं। ‘रसपिरिया’ तथा ‘तीसरी कसम’ जैसी कहानियों में प्रेम की संवेदना का चित्रण है तो ‘पंचलैट’ में प्रतीकात्मक रूप में औद्योगीकरण और यंत्रयुग का जिसमें प्रेम के साथ विनोद का स्वर भी विद्यमान है। ‘संवदिया’, ‘आत्मसाक्षी’, ‘संकट’, ‘तबे एकला चलो रे’ नामक कहानियों में रेणु ने ग्रामीण समाज के परिवेश के चित्रण के साथ-साथ राजनीतिक चेतना, बंटवाईदार-जमींदार संघर्ष, नेताओं का वर्ग स्वार्थ तथा भ्रष्टाचार के कुत्सित रूप को उजागर किया है।

रेणु ने यद्यपि शहरी संवेदना से जुड़ी कहानियां ‘टेबिल’, ‘कस्बे की लड़की’ आदि भी लिखी हैं, किन्तु इनमें गहराई तथा रचना शिल्प का अभाव पाया जाता है। वास्तव में रेणु अंचल से जुड़े रचनाकार हैं, जिनको अज्ञेय ने ‘धरती का धनी’ संबोधन दिया है। रेणु को ग्रामीण भारत की आत्मा से लोगों को जोड़ने वाला रचनाकार माना जाता है। इन्होंने प्रेमचन्द की कहानी की परंपरा को फिर से जोड़ा और मध्यवर्गीय नागरिक को भी चित्रित किया, जो जीवन की केन्द्रियता के कारण लोगों से कट गया था।

रेणु का कथा-शिल्प

रेणु की कहानी ‘तीसरी कसम’ की संरचना जटिलतर होते हुए यथार्थ का वर्णन करती है, जिसे मूल कथा के साथ कथा सूत्रों को जोड़कर ‘लम्बी कहानी’ का रूप दिया गया है। वास्तव में यह

कहानी किसी विचार या आदर्श का केन्द्र न होकर जीवन के अनुभव से सीधे जुड़ी हुई है, जिसे बहुत बारीक विवरणों के सहारे रेणु ने जीवंत तथा आकर्षक बनाया है। वास्तव में रेणु मुख्यकथा के पात्रों के माध्यम से मात्र कहानी ही नहीं सुनाते अपितु इसके द्वारा वे संपूर्ण परिदृश्य को समाज तक प्रसारित भी करते हैं।

रेणु की कथा भाषा मुख्यतः लोकभाषा है, जिसमें भीतरी लय, प्रवाह, गद्य के साथ ही आंतरिक संगीत, नाद और ध्वनि के तत्त्व विद्यमान हैं, जिसका संयोजन इस लोकभाषा को एक सार्थक भाषा का रूप प्रदान करता है।

वास्तव में रेणु प्रेमचन्द द्वारा निर्मित कथा-भूमि को ग्रहण करते हुए, उसे सांस्कृतिक गरिमा से सुशोभित करते हुए शिल्प के निर्माण में नवीनता तथा आधुनिकता के साथ स्थानीय रंगों को समाहित करते हैं इसलिए प्रेमचन्द द्वारा वर्णित भारतीय ग्राम-समाज रेणु की कलम से जीवंत, रसपूर्ण तथा नये आयामों को ग्रहण करता हुआ प्रतीत होता है।

तीसरी कसम : पाठ-बोध और प्रक्रिया

शीर्षक का अर्थ-संकेत

लोक-जीवन में कसम, सौगंध या शपथ लेने का अर्थ है वह वादा जो अपने आचरण में उतारकर प्राण-पण से निभाया जाता है और जिसको तोड़ना पाप के बराबर समझा जाता है। कसम वास्तव में वह आचार-व्यवहार का मूल्य है, जो आस्था और विश्वास के साथ-साथ ईमानदारी व कथनी-करनी की एकरूपता से जुड़ा होता है। ‘तीसरी कसम’ कहानी में पहली दो कसमों को पृष्ठभूमि में रखकर नायक हीरामन की तीसरी कसम को नाटकीय सार्थकता देने के उद्देश्य से कथासूत्र का संचालन किया गया है, जोकि हीरामन के चरित्र तथा आचरण के व्यवहार को उजागर करता है।

पिछली दोनों कसमों में नैतिक निर्णय

हीरामन गाड़ीवान पिछले कटु एवं गंभीर अनुभवों के निष्कर्ष के आधार पर कसम के रूप में पहला निर्णय और संकल्प चोरबाजारी का माल न लाने तथा दूसरा-बांस लाने हेतु गाड़ी का प्रयोग न करने के अर्थ में दिया गया है। उपर्युक्त दोनों कसमों में जीवन की गाड़ी खींचने हेतु हीरामन के लिए नैतिक निर्णय का दर्जा रखती हैं। लेखक के कौशल से ये निर्णय हीरामन की भाषा में संपन्न हुए हैं तथा हीरामन का जीवन उसके बैल और गाड़ी ही हैं। हीरामन की पहली दोनों कसमों को कथानक में प्रयोजन के माध्यम से कुशलतापूर्वक पिरोया गया है, जिनको पृष्ठभूमि में रखते हुए रेणु ने कहानी में ‘तीसरी कसम’ को ही बताया है।

कम्पनी और कम्पनी की औरत कहानी का ताना-बाना

‘तीसरी कसम’ का शीर्षक और कथावस्तु एक बार फिर हीरामन के लिए संगीन अनुभव में गुजरते हुए एक नये सबक व नयी कसम के रूप में प्रकट होती है, क्योंकि हीरामन एक प्रकार

4 / NEERAJ : हिन्दी कहानी

से 'हीराबाई' के रूप में चोरी-चकारी का माल तथा बांस की लदनी का कार्य ही कर रहा है। हीराबाई मथुरामोहन नौटंकी कम्पनी में लैला की भूमिका निभाने वाली स्त्री है, जिसे मेला उठने के ठीक पन्द्रह पहले रातों-रात चोरी से निकालकर दूसरे मेले की नौटंकी कम्पनी में शामिल होने हेतु ले जाया जा रहा है। लगातार सात वर्षों तक मेलों में लदनी-लादने वाला हीरामन हीराबाई के नाम से अनभिज्ञ है तथा हीराबाई उसकी गाड़ी में चौबीस घंटों का सफर भी तय करती है। हीराबाई कम्पनी की औरत है और उसका कार्य नौटंकी में लोगों का मनोरंजन करना है। उसे रातों-रात दूसरी कंपनी में भेजने के पीछे कम्पनी की औरत व कम्पनी के बीच अपनी कीमत जताने तथा मोल-तोल और भाव बढ़ाने का मसला प्रतीत होता है। दूसरे शब्दों में, नौटंकी या कम्पनी कहने के अर्थ में वाणिज्य-व्यापार का स्वर मुखरित होता है, जिसमें हीराबाई वाणिज्य व्यापार की वस्तु है, जिसे मोल-भाव न होने के कारण अन्य कंपनी की नौटंकी में भेज दिया जाता है।

मेले में पहुंचने के उपरांत हीराबाई के प्रभाव के कारण हीरामन 'पास' के कारण नौटंकी देखने पहुंच जाता है और हीराबाई से लटपट बोल बोलने वालों के साथ मारपीट भी करता है। वहां यह बात उजागर हो जाती है कि हीराबाई मथुरामोहन कंपनी से भागकर आई है। हीराबाई के लटैत तथा नौटंकी के लोगों के साथ मारपीट की घटना व्यवसाय जगत की आपसी प्रतियोगिताओं की गलाकाट स्पर्धा की ओर संकेत करती है।

'तीसरी कसम' एक प्रेम कथा के अतिरिक्त

कुछ विद्वानों का मानना है कि 'तीसरी कसम' कहानी की विषयवस्तु को एक प्रेम कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, किन्तु हीराबाई और हीरामन की बैलगाड़ी की यात्रा एक स्वप्न के रूप में घटित होती है, जिसके उपरांत उनके जीवन में अनेक अनात्मीय संदर्भ जुड़ते जाते हैं, जोकि इसे केवल एक प्रेम कथा सिद्ध नहीं करते हैं। इस कहानी में रेणु ने लोक-जीवन की सांस्कृतिक समृद्धि के साथ-साथ आर्थिक विषमता को भी दर्शाया है, जोकि मानवीय सत्य की वास्तविकता के रूप में प्रकट होती है।

'तीसरी कसम' कहानी का कथ्य प्रेम-कहानी के अतिरिक्त सामाजिक-आर्थिक यथार्थ को भी उजागर करता है, जिसे कहानी के संपूर्ण रूपबंध के तंतुओं में समाहित करके उनकी परस्पर प्रतिक्रियाओं के रूप में रेणु ने व्यंजित किया है तथा यही 'तीसरी कसम' के कथ्य के संदर्भ में सत्य भी है।

अलग-अलग संसारों की सीमाओं का परस्पर उल्लंघन

'तीसरी कसम' की कहानी दो अलग-अलग संसारों की कहानी है, जिसमें एक संसार कंपनी तथा कंपनी की औरत के प्रभाव का है तथा दूसरा इससे बिल्कुल गांव की दुनिया का है, जहां नौटंकी देखना एक दुष्कर्म समझा जाता है। हीरामन की मित्रमण्डली के सभी सदस्य गुप्त रूप से नौटंकी देखते हैं, किन्तु इस सूचना को गांव-घर तक न पहुंचने देने की मिलकर कसम भी

खाते हैं। हीरामन के एक मित्र धुनीराम को तो अकरणीय अपराध बोध के कारण तेज बुखार भी हो जाता है और वह नौटंकी-कंपनी में ही नौकरी पकड़ने के कारण गांव न लौटने की इच्छा व्यक्त करता है।

कहानी बीच-बीच में हीरामन पर केन्द्रित रहती है तथा कंपनी की औरत हीराबाई की यात्रा के दौरान हीरामन का उस पर मुग्ध हो जाना इसे दो समानांतर संसारों की कहानी बनाता है, जिसमें हीरामन व हीराबाई एक-दूसरे के दायरे को काटकर एक-दूसरे की चौहद्दी में प्रवेश करते हैं। अतः हीराबाई पर मुग्ध होने के परिणामस्वरूप हीरामन तीसरी कसम खाकर अपनी मंशा को इस प्रतिक्रिया के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

हीरामन की इच्छामूर्तियां

बैलगाड़ी की यात्रा के दौरान हीरामन हीराबाई के सान्निध्य में जो समय व्यतीत करता है, उसमें उसे हीराबाई अपरिचित अनुभूतियों के रहस्यलोक में कभी डाकिनी-पिशाचिनी तो कभी चम्पा का फूल, परी, देवकुल की औरत, भगवती मैया लगती है तो कभी वह हीरामन को गुस्सा होने पर आंखों से चिगारी निकालने वाली औरत लगती है, तो कभी वह हीराबाई की छवि पर गांव-घर का जनाना घरेलू बिम्ब आरोपित कर अपनी अनेक इच्छामूर्तियों का निर्माण करता है। कभी हीरामन हीराबाई को महुआ घटवारिन में रूपांतरित करता हुआ अपने मन की अवस्था को गीत-कथा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। हीराबाई इस गीत से प्रभावित होकर हीरामन को गुरु का दर्जा देती हुई खुद भी वही गीत गुनगुनाने लगती है। ढलान से गाड़ी उतारते समय हीराबाई हीरामन का एक कंधा पकड़ लेती है और चढ़ाई पर उंगलियां कस जाती हैं, केवल यही अभिव्यक्ति हीराबाई की ओर से होती है।

हीरामन और हीराबाई : सम्बन्ध की अर्थछायाएं

हीरामन का संसार 'लगा' और 'देखा' से बना है, क्योंकि उसकी दुनिया सहज विश्वासी दुनिया है और वह पूरी ईमानदारी से गाड़ीवानी करता है। उसकी गाड़ी में सवार 'अकेली औरत' की सुरक्षा का दायित्व भी वह अपना ही मानता है, जबकि इसके विपरीत हीराबाई का संसार 'परखा' से बना है और वह क्योंकि गाड़ीवान के साथ अकेली यात्रा कर रही है इसलिए वह हीरामन को मीठा, भैया जैसे संबोधन से पुकारते हुए उस पर भरोसे तथा आत्मीयता का बोझ डालकर अपनी सुरक्षा को सुनिश्चित कर लेती है। उसे हीरामन पर पूर्ण भरोसा हो जाता है तथा वह सहज निश्चिन्त भाव से सोकर, कथा-कहानी, विनोद, गीत-संगीत के साथ अपनी यात्रा पूरी करती है। महुआ घटवारिन के गीत से मुग्ध होकर वह हीरामन को गुरु और उस्ताद कहकर पुकारती है।

हीराबाई कलाकार के रूप में हर जगह सीखने तथा संचित करने लायक सामग्री तलाशती है, तो हीरामन का संसार पशु-प्रकृति-मनुष्य के मध्य अस्तित्व के विभिन्न आयामों का निर्माण करता है, क्योंकि बैल भी महुआ घटवारिन का गीत सुनकर